

Newspaper Clips Sept. 16, 2015

Dainik Jagran ND 16/09/2015 P-10

बेहतर शिक्षा के साथ रिसर्च व खोज ही सफलता का मूलमंत्र



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआईटी) दिल्ली को वर्ष 2015-16 के यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग में सर्वश्रेष्ठ 200 संस्थानों की सूची में 179वां स्थान दिया गया है। जुलाई में ही राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने मैसूर में एक कार्यक्रम में विता जताई थी कि प्रतिष्ठित एजेसियों द्वारा प्रकाशित दुनिया की विश्वविद्यालयीय वरीयता सूची में सर्वोच्च 200 स्थानों में एक भी भारतीय संस्थान नहीं है। शिक्षक दिवस के सप्ताह भर बाद ही आइआईटी दिल्ली को इस उपलब्धि के लिए राष्ट्रपति का शुभकामना संदेश भी मिल गया है। संस्थान के कार्यवाहक निदेशक प्रोफेसर डॉ. क्षितिज गुप्ता से दैनिक जागरण संवाददाता अरविंद कुमार द्विवेदी ने विस्तार से बात की। डॉ. क्षितिज ने बेहतर शिक्षा के साथ रिसर्च और खोज को ही सफलता का मूलमंत्र बताया। प्रस्तुत है बातचीत के प्रमुख अंश :

■ ग्लोबल रैंकिंग में चयनित होने की उपलब्धि का श्रेय आप किसे देना चाहेंगे।

- इस उपलब्धि का श्रेय सभी टीचिंग व नॉन टीचिंग फैकल्टी को देना चाहूंगा। वे दिन-रात मेहनत करते हैं हमारे छात्रों को अच्छी शिक्षा देने के लिए। साथ ही इस उपलब्धि का श्रेय उन छात्रों को भी जाता है जो कठिन प्रवेश परीक्षा पास कर देश के कोने-कोने से आकर यहां पढ़ाई करते हैं। आखिरकार उनकी सफलता से ही हमारी पहचान है। हमें गर्व होता है जब हमारे छात्र हर क्षेत्र में सफलता की बुलंदी को हासिल करते हैं।

■ यहां सबसे ज्यादा किन चीजों पर फोकस किया जाता है।

- हमारा मूलमंत्र है एम्पेसिस ऑन एक्सिलेंस ऑफ टीचिंग, रिसर्च एंड इनोवेशन। यही भविष्य की जरूरत भी है। हम ग्लोबल स्तर की जरूरतों के लिए इंजीनियरों को तैयार करते हैं। वैश्विक स्तर पर इंजीनियरों की मांग को देखते हुए हमें अपनी शैक्षणिक गुणवत्ता को बनाए रखना बेहद जरूरी है।

■ आइआईटी-आइआइएम के छात्र मल्टीनेशनल कंपनी ज्वाइन कर लेते हैं। एकेडमिक में न आने का कारण क्या कम वेतन मिलना है।

- ऐसा नहीं है। हमारे कैम्पस में ही ज्यादातर टीचिंग फैकल्टी ऐसी है जिन्होंने किसी न किसी आइआईटी से कोई न कोई डिग्री हासिल की है। दरअसल, हम क्या प्रोफेशन चुनते हैं यह हमारी रुचि पर निर्भर होता है। आइआईटी से पढ़े हुए छात्रों के सामने संभावनाओं का आकाश है। कम वेतन एक कारण हो सकता है, एकमात्र

कारण नहीं। जैसे भी शिक्षण के बहुत से फायदे भी हैं। मसलन हम हमेशा अपडेट रहते हैं।

■ किसी भी प्रौद्योगिकी संस्थान के लिए आज की बड़ी जरूरत क्या है।

- इनोवेशन, डिजाइन एंड प्रोडक्ट डेवलपमेंट आज की सबसे बड़ी जरूरत है। मार्केट में बने रहने के लिए इनमें महारत होना जरूरी है। हम इसमें सबसे आगे रहें, इसके लिए हमारी पूरी टीम दिन-रात मेहनत करती है। हमारे छात्र, हमारा संस्थान वैश्विक स्तर पर मांग के अनुरूप सबसे सशक्त और सबसे ज्यादा अपडेट रहे यही हमारा लक्ष्य रहता है।



आइआईटी दिल्ली के कार्यवाहक निदेशक प्रोफेसर डॉ. क्षितिज गुप्ता।

■ अगले वर्ष इस सूची में किस स्थान पर आने का लक्ष्य रखा है।

- हम लगातार मेहनत कर रहे हैं। इस उपलब्धि से एक पॉजिटिव मैसेज तो जाएगा ही। जेईई की परीक्षा में 10 लाख से अधिक बच्चे शामिल होते हैं। वर्षों से आइआईटी एक ब्रांड बना हुआ है। इस

उपलब्धि से हमारे छात्रों व शिक्षकों की अहमियत और बढ़ेगी। साथ ही हमारी जिम्मेदारी भी बढ़ गई है कि इस पोजीशन को बनाए रखने के साथ और बेहतर करें।

■ हाल के दिनों में आइआईटी दिल्ली में ऐसी क्या चीजें विकसित की गई जो आम ■ आदमी के जीवन को सरल बनाती हों।

- नेत्रहीन पढ़ने के लिए जो ब्रेल स्लेट इस्तेमाल करते हैं उसमें पेपर को सिर्फ एक बार ही इस्तेमाल किया जा सकता है। हमने उनके लिए ब्रेल लिपि की स्लेट (रिफ्रेशेबल ब्रेले) विकसित की है जिसमें एक ही पेपर को बार-बार इस्तेमाल किया जा सकता है।

नेत्रहीनों के चलने के लिए छड़ी (स्मार्ट केन) भी बनाई है जो उनके जीवन को आसान बनाती है। साथ ही वाटरलेस यूरिनल (जीरोडर) भी बनाया है जो स्वच्छ भारत मिशन के लिए एक महत्वपूर्ण अविष्कार साबित हो रहा है। इसका इस्तेमाल बिना पानी के किया जा सकता है।

■ निजी संस्थानों में कम गुणवत्ता वाली डिग्रियां दी जा रही हैं। इन पर कैसे रोक लगाई जा सकती है।

- देश की जनसंख्या और उसकी जरूरत के हिसाब से उच्च गुणवत्ता वाले संस्थानों की कमी है। निजी संस्थान इसी का फायदा उठाते हैं। आइआईटी स्तर के संस्थानों की संख्या बढ़ाए जाने के साथ ही छोटे संस्थानों को भी अपग्रेड किया जाना चाहिए। संस्थानों का आधारभूत ढांचा विकसित किया जाए। संस्थानों के पाठ्यक्रम ऐसे हों जो छात्रों को सैद्धांतिक ज्ञान के साथ ही व्यवहारिक रूप से भी दक्ष बनाएं और ग्लोबल स्तर पर उन्हें अपनी पहचान दिला सकें। हम आपस में सामंजस्य बिठाकर रखते हैं और सर्वश्रेष्ठ प्रैक्टिसेज को फॉलो करते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में एकेडमिक ऑटोनोंमी बहुत जरूरी है ताकि संस्थान अपनी क्षमता का पूरा इस्तेमाल कर सकें।

Dainik Jagran ND 16/09/2015 P-01

आइआइटी दिल्ली वर्ल्ड रैंकिंग में 179वें स्थान पर

पहली बार देश के दो शिक्षण संस्थान शीर्ष 200 में, आइआइएससी बेंगलुरु 147वें पायदान पर

नई दिल्ली, एजेंसियां : आइए थोड़ा खुश हो लें। शिक्षा के क्षेत्र में देश का गौरव बढ़ाने वाली खबर है। पहली बार भारत के दो शिक्षण संस्थानों ने दुनिया के शीर्ष 200 विश्वविद्यालयों में जगह बनाई है। मंगलवार को जारी हुई क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2015-16 में डॉडवैन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस (आइआइएससी) बेंगलुरु को 147 और इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आइआइटी) दिल्ली को 179वां स्थान मिला है। राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने इसे शैक्षणिक समुदाय के लिए उत्साह बढ़ाने

वाली उपलब्धि बताया है। इसके लिए उन्होंने आइआइएससी के निदेशक अनुपम कुमार और आइआइटी दिल्ली के कार्यकारी निदेशक क्षितिज गुप्ता को व्यक्तिगत तौर पर बधाई संदेश भेजा है। उम्मीद जताई कि दोनों संस्थान दुनिया में नंबर एक स्थान हासिल करने के लिए लगातार प्रयत्नशील रहेंगे।

ब्रेककवैरली सायमंड्स (क्यूएस) वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग की सूची में भारत के 14 संस्थानों को जगह मिली है। इनमें

आइआइटी चांबे (202), आइआइटी मद्रास (254), आइआइटी कानपुर (271), आइआइटी खड़गपुर (286) और आइआइटी रुड़की (391) प्रमुख हैं। सूची के अनुसार अमेरिका का मैसाच्युसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी पूर्व की भांति दुनिया में नंबर वन यानी शीर्ष स्थान पर बना हुआ है, जबकि इसी देश की हार्वर्ड यूनिवर्सिटी चौथे स्थान से छलांग लगाकर इस वर्ष दूसरे पायदान पर पहुंच गई है।

ब्रिटेन की यूनिवर्सिटी ऑफ केंब्रिज के लिए अच्छी खबर नहीं है। वह दूसरे स्थान से खिसक कर तीसरे नंबर पर पहुंच गई है। अमेरिका की स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी भी सातवें स्थान से छलांग लगाकर चौथे स्थान पर काबिज हो गई है। इसी देश के कैलिफोर्निया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी को पांचवां स्थान मिला है। पिछले वर्ष यह संस्थान आठवें स्थान पर था, जबकि यूनिवर्सिटी ऑफ ऑक्सफोर्ड शीर्ष पांच से बाहर होकर छठवें नंबर पर पहुंच गई है।

इस उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई।

हमारे शैक्षणिक संस्थानों में सर्वश्रेष्ठ बनने की क्षमता है, बशर्ते वे गुणवत्ता सुधार के काम में लगातार जुटे रहे। इस वैश्विक रैंकिंग से विकास के नए रास्ते खुलेंगे।

-प्रणव मुखर्जी, राष्ट्रपति

शीर्ष दस शिक्षण संस्थान

- मैसाच्युसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (अमेरिका)
- हार्वर्ड यूनिवर्सिटी (अमेरिका)
- यूनिवर्सिटी ऑफ केंब्रिज (ब्रिटेन)
- स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी (अमेरिका)
- कैलिफोर्निया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (अमेरिका)
- यूनिवर्सिटी ऑफ ऑक्सफोर्ड (ब्रिटेन)
- यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन
- इंपीरियल कॉलेज लंदन
- स्विस फेडरल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (स्विट्जरलैंड)
- यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो (अमेरिका)

Millenium Post ND 16/09/2015 P-01

Finally, two Indian institutes figure in world varsity rankings

OUR CORRESPONDENT

NEW DELHI: After several decades, finally India managed to get a toe-hold in the top 200 of the Quacquarelli Symonds' (QS) World University rankings. The Indian Institute of Science (IISc), Bangalore has taken the top spot among Indian institutes, bagging the 147th rank while IIT Delhi has come in at 179th place in 2015-16 rankings.

This is the first time that IISc has entered the rankings while IIT Delhi has moved up all the way from 235th spot last year. Overall, there are 14 Indian institutes in the QS World University rankings. A total of 7 institutes including IISc Bangalore (147th), IIT Delhi (179th), IIT Bombay (202nd), IIT Madras (254th), IIT Kanpur (271st), IIT Kharagpur (286th), IIT Roorkee (391st) figure in the top 400.

IIT Guwahati, University of Delhi, University of Calcutta, Banaras Hindu University, Panjab University, University of Mumbai and University of Pune



are on the list as well but beyond the top 400.

In the overall rankings, the Massachusetts Institute of Technology (MIT) retains the top spot for the fourth year running. Harvard University moves up two places to rank second, followed by the University of Cambridge and Stanford University in joint third.

This is the 12th edition of QS' annual ranking of the world's top universities, which uses six performance indicators to assess institutions' global reputation, research impact, staffing levels and international complexion.

Virat Vaibhav ND 16/09/2015

P-5

राष्ट्रपति मुखर्जी ने दी आईआईटी को बधाई

नई दिल्ली। राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने विश्वविद्यालों की विश्व रैंकिंग में शीर्ष 200 की सूची में स्थान पाने के लिए भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी) बेंगलुरु और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) दिल्ली को बधाई दी और कहा कि उच्च स्थान शैक्षणिक समुदाय के उत्साह को बढ़ाता है। जारी किए गए 2015-16 के क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग के मुताबिक भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली को क्रमशः 147 वां और 179 वां स्थान दिया गया है। आईआईएससी, बेंगलुरु के निदेशक प्रो. अनुराग कुमार और आईआईटी, दिल्ली के कार्यवाहक निदेशक प्रो. क्षितिज गुप्ता को भेजे अपने संदेश में राष्ट्रपति ने कहा, मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि आईआईएससी, बेंगलुरु और आईआईटी, दिल्ली को 2015-16 के क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग में क्रमशः 147 वां और 179 वां स्थान दिया गया है। इस शानदार उपलब्धि पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। मुखर्जी ने कहा कि भारत में बेहतरीन और स्वभाविक प्रतिभा है और यहां के संस्थानों में सर्वश्रेष्ठ बनने की संभावना है। ■

Hindustan ND 16/09/2015

P-12

प्रणब ने दीक्षांत समारोह में आह्वान किया

युवा उद्यमी बनकर रोजगार पैदा करें

सलाह

नागपुर | सुहेल हागिद

राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने युवा तकनीकी विशेषज्ञों को बेहतर नौकरी की तलाश करने के बजाए खुद उद्यमी बनकर रोजगार के अवसर पैदा करने की सलाह दी है।

केंद्र सरकार के 'स्टार्टअप इंडिया- स्टैंडअप इंडिया' का जिक्र करते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि इस मुहिम की कामयाबी इस बात पर निर्भर है कि हम तकनीक के साथ देश में मौजूद मानव संसाधनों का इस्तेमाल कैसे करते हैं।

राष्ट्रपति ने आईआईटी दिल्ली और आईआईएससी बेंगलुरु को दुनिया के शीर्ष 200 संस्थानों की सूची में शामिल होने पर बधाई दी है। प्रणब मुखर्जी ने विश्वेश्वरय्या राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान के 13वें दीक्षांत समारोह में कहा कि केंद्र सरकार ने स्टार्टअप के लिए वित्त पोषण को बढ़ावा देने और नौकरी के अवसर पैदा



नागपुर में मंगलवार को वीएनआईटी के दीक्षांत समारोह में राष्ट्रपति।

आयोजन :

- शीर्ष 200 की सूची में दो भारतीय संस्थानों के शामिल होने पर प्रणब ने दी बधाई
- केंद्र सरकार के 'स्टार्टअप इंडिया- स्टैंडअप इंडिया' का किया जिक्र

तकनीकी शिक्षा पर जोर दिया

राष्ट्रपति ने तकनीकी शिक्षा पर जोर देते हुए कहा, सामान्य तौर पर शिक्षा, विशेषकर तकनीकी शिक्षा को हमेशा देश के आर्थिक, समाजिक व राजनीतिक विकास में परिवर्तन के एक साधन के रूप में देखा गया है। समारोह में महाराष्ट्र के राज्यपाल सी विद्यासागर, सीएम देवेंद्र फडणवीस व नितिन गडकरी मौजूद थे।

करने के लिए उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से सरकार ने 'स्टार्टअप इंडिया- स्टैंडअप इंडिया' अभियान शुरू किया है।

उन्होंने कहा कि युवा प्रौद्योगिकीविदों का लक्ष्य उद्यमी बनकर रोजगार के अवसर पैदा करना होना चाहिए। यह देश के समावेशी और सतत विकास के लिए सबसे बड़ा योगदान होगा। राष्ट्रपति ने दुनिया के शीर्ष 200 शैक्षणिक संस्थानों की सूची में दो भारतीय संस्थानों के शामिल

होने पर खुशी जाहिर की। उन्होंने कहा कि पिछले तीन वर्षों से कहते रहे हैं कि विश्व के शीर्ष 200 संस्थानों की फेहरिस्त में एक भी भारतीय संस्थान शामिल नहीं है, लेकिन खुशी है कि मेहनत रंग लाई।

सुरक्षा में बड़ी चूक : राष्ट्रपति की सुरक्षा में बड़ी चूक हुई है। नागपुर हवाईअड्डे पर सूअरों का एक झुंड उस समय रनवे पर पहुंच गया जब राष्ट्रपति का विमान उतरने के बाद टर्मिनल की ओर जा रहा था।

With IIT aid, Bengal plains to grow tea

Kolkata, Sept 15: Quality Indian tea will no more be limited to the likes of Assam and Darjeeling as IIT is helping new areas in Kharagpur and Purulia to produce scientifically-grown and processed tea.

At a small tea garden inside the campus, IIT-Kharagpur researchers have demonstrated how organic tea could be grown scientifically even in the plains and then the leaves processed in a cheaper way with their newly patented energy-saving machine.

In the vicinity of the campus, the Science and Technology Entrepreneurs Park (STEP) at the IIT, has identified 17 villages where commercial tea cultivation would soon begin.

"Tea cultivation will begin in non-traditional areas

of south Bengal using new scientific methods. We are targeting small farmers with 5-10 cottah of fallow land. This will uplift the rural economy as well," STEP's managing director and Biotechnologist Satyahari Dey told PTI.

Under a project funded by the Tea Board, a team of scientists led by Professor Bijoy Chandra Ghosh of the Agricultural and Food Engineering Department has developed new CTC (crush, tear and curl) machines, which occupy less space and consume less energy.

"The existing technology used everywhere in India and even outside, is a century old. Our technology is very innovative and patented. It will reduce the cost of tea processing by about 20-30 per cent," Ghosh said.



New crush, tear and curl (CTC) machines, which occupy less space and consume less energy, have been developed

They have already demonstrated the technology to small tea growers who were welcoming it. "We are confident that this machine will change the tea industry forever due to cost savings," Confederation of Indian Small Tea Growers' Associa-

tion (CISTA) President Bijoy Gopal Chakraborty said.

At a tea plantation in Jalpaiguri, CISTA members were installing the first such machine from IIT this month. "You will soon find small tea growers queueing at IIT to get the machine.

This will become a game changer," Chakraborty said.

IIT-Kharagpur officials said they would provide all required technological and agricultural inputs for new croppers. Traditionally tea has been grown along the slopes of hills and not in plain lands.

Researchers say tea could be grown in plain lands like Kharagpur in West Midnapore district if the agricultural plot is turned into a slope so that the crop doesn't get damaged due to standing water. "The soil here is laterite and porous. Shade management using an alternate tree crop will ensure that the temperature in the field never crosses 35-36 degrees centigrade. Irrigation can be done through sprinklers," Ghosh, who started the tea project, said. *PTI*

Distance separates mentors, new IIMs

Rozelle Laha

rozelle.laha@hindustantimes.com

IIM Amritsar is located about 25 minutes away from Amritsar airport. However, reaching the institute involves a journey of about 12 hours for the faculty from the institute's mentor, IIM Kozhikode. Most of the flights from Kozhikode to Amritsar have two stops, Mumbai and Delhi. Sources say faculty members from IIM Kozhikode board a flight from Calicut Airport at 11.40 am to reach New Delhi at 4.40 pm after stopping in Mumbai for little more than an hour. Their flight leaves New Delhi at 10:15 pm, reaching Amritsar at 11:30pm. This means loss of a full working day for them.

Asked about the level of dependency of newly set up IIMs on the mentor institute, a senior IIM official on conditions of anonymity says, "For now, IIM Amritsar will have to completely depend on the mentoring institute for faculty members as quality is a major concern at any new IIM; the faculty should be familiar with the IIM system. So, it is always a good option to get the faculty members from the mentoring institute rather than any other institute close by." An IIM official confirmed that on an average three faculty members have to



DISTANCE MATTERS

Though most newly- set up IIMs are located close to their city airports, there are no direct flights connecting them to cities where their mentor institutes are located. So, mentor institute faculty in most cases spends a whole working day travelling from one city to another

be available on (the new) campus at any given point of time, at an institute with 50 or more students.

IIM Bodh Gaya, too, is located close to the Gaya International Airport but doesn't have any direct flights from Kolkata, home to its mentor institute, IIM Calcutta. "We are taking trains from Kolkata to reach Gaya. It takes about six hours. We also have the option of travelling to Patna and taking a flight to Kolkata but that would be very tortuous as it is a long ride to Patna from IIM Bodh Gaya," says Manish Thakur, professor, IIM Calcutta. Similar problems are faced by faculty from IIM Lucknow mentoring IIM Sirmour; IIM Indore mentoring IIM Sambalpur and IIM

Ahmedabad mentoring IIM Nagpur as no direct flights connect the cities mentioned.

IIM Visakhapatnam being mentored by IIM Bangalore, however, has direct flights connecting Bangalore and Visakhapatnam. As Dr Sourav Mukherji, dean-programmes at IIM Bangalore and nodal officer of IIM Visakhapatnam puts it, "Good connectivity is beneficial to us at IIM Bangalore because many our faculty members will be travelling to and fro frequently while some are stationed at Visakhapatnam. Our administrative staff have also been travelling to set up infrastructure and processes at Visakhapatnam. In such a scenario, good connectivity certainly helps."

P-10

IITs, NITs flout ministry order on acceptance fee

HT Correspondent

■ letters@hindustantimes.com

NEW DELHI: Students who blocked a seat in an IIT or NIT during counselling process and dropped out later are losing out the ₹45,000 acceptance fee they deposited, even after the human resource development (HRD) ministry directed the Joint Seat Allocation Authority (JoSAA) to return the same.

Sources said the HRD ministry has received several complaints from students who said JoSAA, which conducted the joint counselling, is not complying with the HRD ministry order.

“We have received such complaints and are soon going to write to JoSAA to do the needful,” a ministry official said.

During the monsoon session of Parliament, HRD minister Smriti Irani had said the acceptance fee would be returned.

Her statement had come in the wake of resentment among students over the new rule introduced by JoSAA, under which students blocking a seat in the institutions but withdrawing later would not be returned the acceptance fee.

UGC brings new norms to boost campus security

**ADITI VATSA &
ARANYA SHANKAR**
NEW DELHI, SEPTEMBER 15

IN ITS attempt to step up security of students in hostels in educational institutes across the country, the University Grants Commission (UGC) has issued a set of guidelines. These include higher boundary walls, barbed wire, police presence on campus and biometric attendance. The guidelines have now come under attack with academicians claiming that they "create conditions of lack of safety and autonomy".

Consider this

- Any physical infrastructure housing students...should be secured by a boundary wall of such height that it cannot be scaled over easily.
- A fence of spiralling barbed wires can be surmounted on the wall so that unauthorised access to the infrastructure is prevented effectively.
- ...should be manned by at least three security guards, sufficiently armed, CCTV cameras, identity verification mechanism and register of unknown entrants/visitors with their identity

proofs and contact details.

- Biometric attendance can be an effective way to overcome proxy.
 - At least one woman security personnel should be deployed at such entry points so that physical security check of girl students or visitors can be undertaken. The bags and other belongings of students/visitors can also be examined, manually and/or by metal detectors
 - Setting up a university police station within the premises of the Higher Educational Institutions.
 - ...should organize quarterly parents-teachers meet so that grievances and gaps in system can be addressed
 - Self-defence training for women studying and working on campus through tie-ups with training institutions / NGOs should be made a mandatory component of extra-curricular activities.
- The guidelines further call for police presence on campus, especially at night. "It is understandable that classes, study, research, meetings, films or concerts can keep students on campus late at night. To handle these situations, police officials can provide on demand short-distance escort services to students as they walk down to hostel or nearest taxi or bus stand etc," the guidelines state.

Pioneer ND 16/09/2015 P-04

ISRO to launch Astrosat to study celestial objects

KESTUR VASUKI ■ BENGALURU

Indian Space Research Organisation (ISRO) is all set to launch Astrosat, a satellite dedicated to study celestial objects on September 28 from spaceport at Satish Dhawan Space Centre, Sriharikota by PSLV C-34 launch vehicle. AS Kiran Kumar, Chairman, ISRO told the media on the sidelines of a function in Bengaluru that the satellite has completed all the tests and will be launched to a 650 km near equatorial orbit around the Earth.

Astrosat, the first mission to be operated as a space observatory by ISRO, carries four X-ray payloads, one UV telescope and a charge particle monitor.

Astrosat is the first dedicated Indian astronomy mission aimed at studying distant celestial objects. The mission is capable of performing observations in Ultraviolet (UV), optical, low and high energy X-ray wavebands at the same time. Astrosat is the first mission to be operated as a space



observatory by ISRO.

According to ISRO, all the payloads and sub-systems are integrated to the satellite. Mechanical fit checks of the satellite with PSLV payload adaptor were performed successfully. Last week, the spacecraft was fully assembled and switched on.

Astrosat will carry four X-ray payloads, one UV telescope and a charge particle monitor. Apart from ISRO,

four other Indian institutions, viz, Tata Institute of Fundamental Research (TIFR), Indian Institute of Astrophysics (IIA), Inter-University Centre for Astronomy and Astrophysics (IUCAA) and Raman Research Institute (RRI) are involved in payload development. Two of the payloads are in collaboration with Canadian Space Agency (CSA) and University of Leicester (UoL), UK.